आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ के मूल अंक 86, में मैंने सवालीराम के जवाब के परिच्छेद दो की पहली पंक्ति पढ़ने के बाद आगे पढ़ना उचित नहीं समझा। मुझे आश्चर्य इस बात पर हुआ कि सम्पादक मण्डल में भौतिक शास्त्र के विद्वानों ने भी इस पंक्ति पर गौर नहीं किया। जवाब लिखने से पहले सवालीराम जी यदि तेल के कटोरे में पानी की 2-4 बूँदें डालकर परिणाम देख लेते तो ठीक रहता। पिछले लगभग 62 वर्षों से मैं रसोईघर का कामकाज सम्हाल रही हूँ, लेकिन ठण्डे तेल की सतह पर पानी की बूँदों के तैरने का चमत्कार मुझे देखने को नहीं मिला है। 'संदर्भ' के अगले अंक में भौतिक शास्त्र के जानकार शायद इस बात का खुलासा कर सकते हैं।

किसी ज़माने में एकलव्य की बाल-विज्ञान पत्रिका में 'करो और सीखो' का नारा लिखा होता था। ऐसा लगता है कि आजकल एकलव्य के लोगों ने ही इस नारे को भुला दिया है।

पिछले अंक में कालूरामजी का 'निबन्ध' विषय पर लेख बहुत सही, सटीक और अच्छा था। किशोर पंवार के लेख भी रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं।

ऐसा लगता है कि गाँधीजी के बन्दरों से सबक लेकर आप लोगों ने 'संदर्भ' पत्रिका में पाठकों की प्रतिक्रिया को छापना बन्द कर दिया है।

सुधा हर्डीकर
होशंगाबाद, म.प्र.

पाठकों से अनुरोध है

'संदर्भ' में प्रकाशित लेखों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ और विचार लिख भेजिए। आपके पत्र 'संदर्भ' के लिए अमूल्य धरोहर हैं।

शैक्षणिक संदर्भ के विगत वर्षों में प्रकाशित लेखों को पढ़ने के लिए एकलव्य की वेबसाइट **www.eklavya.in** विज़िट कीजिए।